थियेटर फॉर एजुकेशन : पद्मिनी रंगराजन का कठपुतली-प्रदर्शन

रंगकर्म का एक बहुत छोटा-सा हिस्सा शैक्षिक उपयोगिता की ओर अग्रसर हो रहा है। रंगमंच को [illegible] प्रभावी माध्यम मानने वाले कुछ रंगकर्मी अनेक शासकीय-अशासकीय योजनाओं, तथ्यों, जागरूकता [illegible] वाले सवालों आदि के प्रचार-प्रसार में भी लगे हुए हैं। वे रंगकर्म के माध्यम से [illegible] चिंतनशीलता को बढ़ावा देना चाहते हैं। बच्चों के बीच शिक्षा एवं अन्य सामाजिक मुद्दों को रोचक [illegible] से सम्प्रेषित करने के उद्देश्य से हैदराबाद की पद्मिनी रंगराजन पिछले कुछ वर्षों से नए प्रयोग [illegible] हैं। वे और उनकी टीम के सदस्य स्वयं अभिनय करने के स्थान पर कठपुतलियों के माध्यम से [illegible] बात कहते हैं। उनके पपेट थियेटर की पूरी प्रक्रिया किसी नाटक को तैयार करने जैसी ही है। [illegible] परम्परा से जुड़े इस माध्यम का प्रयोग करने वाली पद्मिनी रंगराजन के बारे में जानना एक [illegible] दुनिया में प्रवेश करना है।

पद्मिनी का रंगकर्म कुछ अलग किस्म का है। वह मानव-कलाकारों के साथ नहीं बल्कि कठपुतली कलाकारों के साथ पिछले सात साल से निरंतर थियेटर कर रही हैं। न केवल शैक्षिक, बल्कि सामाजिक जागरूकता के लिए निरंतर शोधरत पद्मिनी रंगराजन ने सन् २००५ में हैदराबाद में स्फूर्ति थियेटर नामक संस्था स्थापित की। तब से लेकर आज तक नित नए प्रयोग और विभिन्न स्थानों पर जाकर अपनी पूरी टीम के साथ उनकी प्रस्तुतियाँ अनवरत जारी हैं। आइये, हम जाने इस अनोखी रंगकर्मी के बारे में।

पद्मिनी रंगराजन ने सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के साथ-साथ महिला अध्ययन में पीजी डिप्लोमा प्राप्त किया। इस समय वे अपने रंगकर्म के साथ-साथ डॉ. आम्बेडकर सार्वत्रिक (ओपन) विश्वविद्यालय से समाज विज्ञान में एम.फिल. कर रही हैं। वे स्फूर्ति थियेटर फॉर एजुकेशनल पपेट्री आर्ट एण्ड क्राफ्ट (स्टेपार्क - शैक्षिक कठपुतली नृत्य कला एवं शिल्प) की संस्थापक हैं। इस संस्था की स्थापना सन् २००५ में हुई। कठपुतली नाच में उनकी रुचि ने शिक्षा में कठपुतली नाच के उपयोग से सम्बन्धित शोध करने एवं बोध निर्मित करने का मार्ग प्रशस्त किया। चूँकि वे अध्यापन की पृष्ठभूमि से जुड़ी हैं, उन्होंने देखा कि कठपुतली नाच से जोड़कर पढ़ाए जाने वाले पाठ का बच्चों के मन पर बहुत [illegible] प्रभाव पड़ रहा है एवं उसके सहारे वे [illegible] अच्छी तरह समझकर याद भी रखते हैं।

पद्मिनीजी एक सक्रिय महिला हैं, [illegible] बच्चों के ज्ञान प्राप्त करने की विधि में एक [illegible] परिवर्तन लाने पर बल दिया है। एक [illegible] प्रतिभा की धनी और कर्मठ व्यक्तित्व होने के कारण वे स्टेपार्क के लिए प्रदर्शन, [illegible] प्रस्तुतियाँ आयोजित एवं संचालित करती हैं। [illegible] हिंदी, अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य छ भाषाएँ भी बोलती हैं। उनके अनुसार कठपुतली कला इतनी अनुकूलनीय है कि वह किसी भी आयु-वर्ग के बच्चों को किसी भी विषय या संदेश से सरलतापूर्वक अवगत करा सकती है। यह [illegible] कला-रूप अन्य दृश्य एवं प्रदर्शन [illegible] -चित्रकारिता, चित्रांकन (रंगाई), मूर्तिकला, कथा-लेखन, रचना-लेखन, स्वर एवं वाद्य संगीत, नृत्य एवं अभिनय के स्तर को सम्मिलित करता है। अतः बच्चों के लिए यह अधिक सफल [illegible] उपयोगी सिद्ध होता है।

कक्षा में कठपुतली नाच का प्रयोग [illegible] पद्मिनी विविध संख्याओं के मूल्य-[illegible] मूल्य-प्रणाली, दशमलव बिंदु, भिन्न [illegible] इकाई पढ़ाने जैसी गणित की विधि संरचनाओं के

साथ सामने आई हैं। इसी प्रकार उन्होंने अंग्रेजी भाषा सिखाने के लिए भी, विशेषतः संज्ञाएँ एवं क्रियाएँ, काल इत्यादि व्याकरणिक हिस्से पढ़ाने के लिए कठपुतली नाच को बहुत उपयुक्त एवं ज्ञानार्जन के लिए बहुत ही सरल बनाया है। केवल इतना ही नहीं, उनकी कठपुतलियों ने व्याकरण सीखने के लिए विद्यार्थियों में जो भय पैदा होता है, उसे कम करने में सहायता की है। इसी प्रकार विज्ञान में 'वृक्ष-जीवन', 'परिवर्तन हमारे चारों ओर', 'हमारी सौर प्रणाली', 'पारिस्थितिक संतुलन' एवं 'पर्यावरण-संरक्षण' इत्यादि पर भी कठपुतली नाच के माध्यम से अनेक रोचक प्रयोग किये हैं।

पद्मिनी ने इंजीनियरिंग एवं डिग्री कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए 'स्वस्थ सम्बन्धों का निर्माण' एवं 'आत्महत्याओं एवं मानसिक तनाव (डिप्रेशन)' जैसी मानसिक संकल्पनाओं पर भी काम किया है। इसके अलावा 'बाल मजदूरी' के विरोध में जानकारी अभियान को संचालित करते हुए एक कठपुतली नाटिका (खेल) भी आयोजित किया और श्रम विभाग हैदराबाद एवं राष्ट्रीय घरेलू श्रमिक आंदोलन हैदराबाद के लिए 'कठपुतली खेल' (नाटिकाएँ) तैयार कर प्रस्तुत किया।

पद्मिनी ने अपने कठपुतली-प्रदर्शन के अनुभव, फीड बैक प्रपत्र, प्रश्नावलियों एवं अंतर्क्रियाओं के आधार पर अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय थियेटर एवं समाजशास्त्रीय संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में शोधपत्र प्रस्तुत किए हैं। सन् २००५ से लेकर आज तक उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं के अनुरोध पर गर्मी की छुट्टियों में बच्चों-शिक्षकों एवं प्रबंधकों के लिए कठपुतली-नृत्य पर कार्यशालाएँ आयोजित की हैं। उन्होंने विविध विद्यालयों, ब्रिटिश ग्रंथालय हैदराबाद, सालारजंग म्युज़ियम, हैदराबाद, ग्रीष्मकालीन आर्ट कैम्प हैदराबाद, हैदराबाद मनोवैज्ञानिक संघ, श्रम आयुक्त कार्यालय, श्रम विभाग हैदराबाद, राष्ट्रीय घरेलू श्रमिक आंदोलन हैदराबाद, कर्नाटक उर्दू अकादमी बेंगलुरु, जट्टु

भाव समाख्या (भाव फेडरेशन) पार्वतीपुरम्, विजयपुरम् जिला आंध्रप्रदेश, वंदेमातरम प्रतिष्ठान, हैदराबाद, औद्योगिक प्रदर्शनी संघ निज़ामाबाद, आंध्रप्रदेश इत्यादि के लिए कठपुतली-प्रदर्शन आयोजित किये।

उन्होंने डी डी सप्तगिरी चैनल के 'टेलीस्कूल' कार्यक्रम के लिए तेलुगु भाषा में 'अजनबी पर भरोसा न करें' नामक कठपुतली फिल्म के माध्यम से समुपदेशन किया।

वे बच्चों को आसानी से उपलब्ध होने वाली सामग्री से कठपुतलियाँ बनाना, कथा-लेखन, लेख-लेखन का प्रशिक्षण भी देती हैं एवं कठपुतली-प्रदर्शन के लिए प्रशिक्षित करती हैं। उनकी संस्था 'स्टेपार्क' विद्यालय शिक्षकों के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण कोर्स भी आयोजित करती है, जिससे उन्हें कक्षा में अध्यापन के लिए सहायता मिलती है। इसमें नर्सरी, प्रि-प्राइमरी एवं प्राइमरी विद्यालय-शिक्षकों के लिए कठपुतली-प्रशिक्षण के साथ कथा-वाचन सम्मिलित रहता है, कठपुतलियों का प्रयोग करते हुए माध्यमिक विद्यालयों के लिए विज्ञान एवं मानविकी का अध्यापन-प्रशिक्षण रहता है। शिक्षकों को कठपुतलियाँ बनाना, स्क्रिप्ट-लेखन एवं प्रस्तुतीकरण-तकनीकी में, विशेषतः सूचना एवं जानकारी देने पर बल देते हुए - प्रशिक्षण दिया जाता है। निजी विद्यालयों एवं 'स्टेपार्क' कार्यालय में ये कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। 'स्टेपार्क'

शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य - एचआईवी/एड्स, ट्रैफिक-सेंस एवं सड़क-सुरक्षा तथा अन्य सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाली अन्य संस्थाओं या गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) के लिए भी कठपुतली-प्रशिक्षण आयोजित करती है।

हाल ही में पद्मिनी ने 'बालिका विवाह' की प्रथा पर एक कठपुतली नाटक (पपेट प्ले) की संकल्पना की और अनेक ग्रामों में इसका सफलतापूर्वक प्रदर्शन भी किया। इस समय वे अपने एक नए प्रोजेक्ट में व्यस्त है, जो 'स्वास्थ्य,सफाई, पोषण-आहार एवं एक क्रियाशील नारी' पर केन्द्रित है। इसमें बच्चों के ज्ञानाधार में [illegible] आमूल परिवर्तन लाए जाने पर बल दिया गया है। पद्मिनी कठपुतली-प्रदर्शन को थियेटर का ही [illegible] मानती हैं और आजीवन इसके लिए नए-नए प्रयोग करने के लिए कटिबद्ध है।

इसके लिए पद्मिनी से सम्पर्क किया जा सकता है - स्फूर्ति थियेटर, शैक्षिक कठपुतली-नृत्य, [illegible] एवं शिल्प (STEPARC-स्टेपार्क), 1-8-[illegible] चिक्कडपल्ली, हैदराबाद 500020, दू. [illegible] 27613699, मो. +91 9866081172, ई-[illegible] sphoorthitheatre@gmail.com तथा वेबसाइट [illegible] www.sphoorthitheatre.com ■